CHAT & DECIDE

इस्लाम:

अल्लाह की रौशनी में जीने वाली ज़िन्दगी

भाग 2

chatanddecide.com

CHAT & DECIDE

क्‌या मानवता को रहस्‌योद्‌घाटन (धर्‌म) की आवश्‌यकता है?

(क्या मानवता को रहस्योद्घाटन (धर्म) की आवश्यकता है?

हाँ, मानवता को रहस्योद्घाटन की आवश्यकता है। यह हमें सिखाता है कि ईश्वर अस्तित्व में है, वह एक है, और यह हमें बताता है कि हमें कैसे जीवन जीना चाहिए। जैसे हर उपकरण के साथ एक उपयोगकर्ता मार्गदर्शिका होती है, वैसे ही हमें भी जीवन के लिए एक मार्गदर्शक की आवश्यकता है — एक ईश्वरीय मार्गदर्शिका।

धर्म मानवता के सबसे गहरे प्रश्नों का उत्तर देता है: हम यहाँ क्यों हैं? मृत्यु के बाद क्या होता है? यह मानवीय विश्वासों को सही करता है और हमें उस शुद्ध एकेश्वरवाद की ओर लौटाता है जिसकी सभी नबियों ने शिक्षा दी थी। आज केवल इस्लाम ही है जो इस सच्चे एकेश्वरवाद को सुरक्षित रखता है।

यहां तक कि नास्तिक भी ईमानदारी को धोखे से बेहतर मानते हैं — लेकिन ऐसे मूल्य कहाँ से आते हैं? ये न परमाणुओं में पाए जाते हैं और न ही पदार्थों में, फिर भी ये वास्तविक हैं और हमारी मानवता को परिभाषित करते हैं। ये इस बात का प्रमाण हैं कि मनुष्य नैतिक प्राणी हैं जिन्हें उद्देश्य के साथ बनाया गया है।

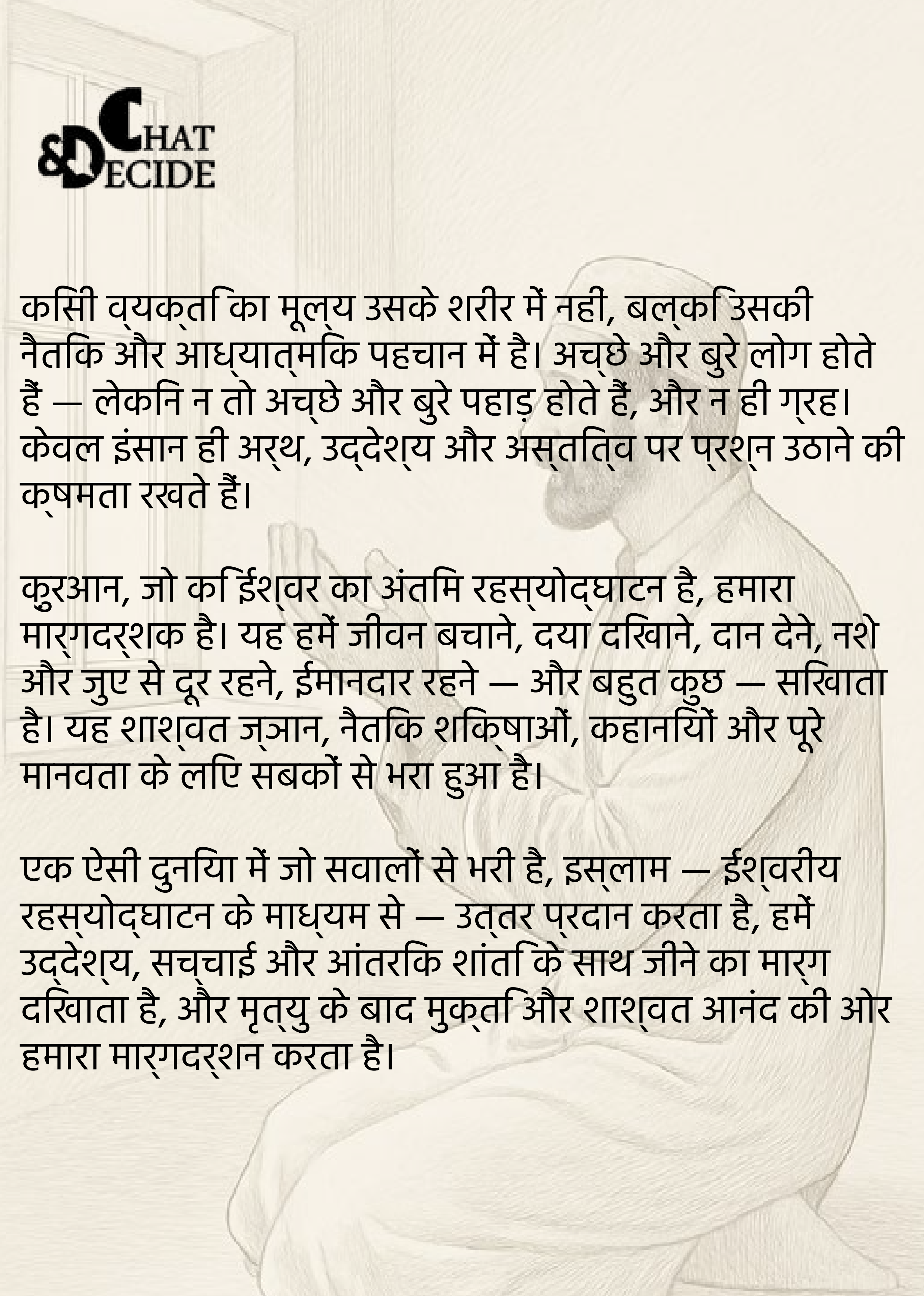

किसी व्यक्ति का मूल्य उसके शरीर में नहीं, बल्कि उसकी नैतिक और आध्यात्मिक पहचान में है। अच्छे और बुरे लोग होते हैं — लेकिन न तो अच्छे और बुरे पहाड़ होते हैं, और न ही ग्रह। केवल इंसान ही अर्थ, उद्देश्य और अस्तित्व पर प्रश्न उठाने की क्षमता रखते हैं।

कुरआन, जो कि ईश्वर का अंतिम रहस्योद्घाटन है, हमारा मार्गदर्शक है। यह हमें जीवन बचाने, दया दिखाने, दान देने, नशे और जुए से दूर रहने, ईमानदार रहने — और बहुत कुछ — सिखाता है। यह शाश्वत ज्ञान, नैतिक शिक्षाओं, कहानियों और पूरे मानवता के लिए सबकों से भरा हुआ है।

एक ऐसी दुनिया में जो सवालों से भरी है, इस्लाम — ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के माध्यम से — उत्तर प्रदान करता है, हमें उद्देश्य, सच्चाई और आंतरिक शांति के साथ जीने का मार्ग दिखाता है, और मृत्यु के बाद मुक्ति और शाश्वत आनंद की ओर हमारा मार्गदर्शन करता है।

Chat & Decide

भगवान बुराई क्यों पैदा करता है?

chatanddecide.com

CHAT & DECIDE

भगवान बुराई क्यों पैदा करता है?

वास्तव में, ब्रह्मांड में अच्छाई ही नियम है और बुराई एक दुर्लभ अपवाद। हम अपने जीवन के अधिकांश समय में अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेते हैं और केवल थोड़े समय के लिए बीमार पड़ते हैं। प्राकृतिक आपदाएँ, युद्ध और दर्द — भले ही कठिन हों — एक ऐसे संसार में क्षणिक रुकावटें हैं जो स्थिरता, उपचार और विकास से भरा है।

यहाँ तक कि जिसे हम “बुराई” कहते हैं, वह भी अक्सर छिपे हुए भले का कारण बनती है:

बीमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करती है।
दर्द हमें सहनशीलता और ताक़त सिखाता है।
भूकंप ज़मीन के दबाव को कम करते हैं और बड़ी आपदाओं को रोकते हैं।
ज्वालामुखी मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं।

युद्ध, हालाँकि दुखद हैं, लेकिन उन्होंने वैश्विक सहयोग और महान आविष्कारों को जन्म दिया है।
ज़हर और सूक्ष्मजीवों से हमें दवाइयाँ और टीके मिलते हैं।

जिसे हम “बुराई” समझते हैं, वह अक्सर विकास का माध्यम और हमारे चरित्र की परीक्षा होती है। यह दर्शाता है कि हम वास्तव में कौन हैं, और हमारी ईमानदारी, धैर्य और विश्वास को परखता है। जीवन केवल एक अध्याय है एक बड़ी किताब का। हम पूरी किताब को एक पन्ने से नहीं आँक सकते। हम एक क्षण में जो देख रहे हैं, उससे अल्लाह की हिकमत का न्याय नहीं कर सकते।

अगर कोई ऐसा संसार चाहता है जहाँ न कोई दर्द हो, न मृत्यु, न दुख — तो वह पूर्णता माँग रहा है, जो केवल परमेश्वर को ही शोभा देती है।

विरोधाभासी रूप से, बुराई का अस्तित्व वास्तव में आस्था का प्रमाण है, उसके विरुद्ध नहीं। अगर हम केवल भौतिक प्राणी होते, तो हम अच्छाई और बुराई को पहचान ही नहीं पाते। यह तथ्य कि हम इनकी पहचान करते हैं, यह दिखाता है कि हम पदार्थ से बढ़कर किसी ऊँचे स्रोत से आए हैं।
ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे “अर्थहीन बुराई” कहा जा सके — वे सभी परीक्षाएँ हैं जो ईश्वरीय हिकमत और रहमत में लिपटी होती हैं।

क्या इस्लाम
हिंसा और आतंकवाद को बढ़ावा देता है?

chatanddecide.com

क्या इस्लाम हिंसा और आतंकवाद को बढ़ावा देता है?

नहीं, इस्लाम शांति और समर्पण का धर्म है और यह मानव जीवन की पवित्रता पर ज़ोर देता है।

अरबी भाषा में “इस्लाम” शब्द उसी मूल शब्द से निकला है जिससे “सलाम” (अर्थात् शांति) शब्द आता है। इस्लाम, जो कि एक रहमत (दया) का धर्म है, आतंकवाद की अनुमति नहीं देता।
इस्लाम की अधिकांश शिक्षाएँ नैतिक मूल्यों से संबंधित हैं। इस्लाम अच्छे चरित्र और नैतिकता को पूरा करने और पूर्ण बनाने के लिए आया है।

इस्लाम मानव शरीर को ईश्वर की रचना मानता है, जिसे नष्ट करने का अधिकार किसी को नहीं है। मानव जीवन पवित्र है और उसकी रक्षा की जाती है, क्योंकि हर व्यक्ति अल्लाह का है।
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने महिलाओं और बच्चों की हत्या को सख्त रूप से मना किया। इतिहास यह भी दिखाता है कि मुसलमानों ने अन्य धर्मों के प्रति सहनशीलता दिखाई है, जैसा कि खलीफा उमर द्वारा यरुशलम में धार्मिक समुदायों की रक्षा से स्पष्ट होता है।

अल्लाह ने कुरआन में कहा है:

“इसी कारण, हमने बनी इसराईल पर लिख दिया[25] कि निःसंदेह जिसने किसी प्राणी की किसी प्राणी के खून (के बदले) अथवा धरती में विद्रोह के बिना हत्या कर दी, तो मानो उसने सारे इनसानों की हत्या[26] कर दी, और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, तो मानो उसने सारे इनसानों को जीवन प्रदान किया। तथा निःसंदेह उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए। फिर निःसंदेह उनमें से बहुत से लोग उसके बाद भी धरती में निश्चय सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं। ”.

(कुरआन 5:32, सूरह अल्-माइदा)

निर्दोष लोगों की हत्या पूरी तरह से वर्जित है।

इतिहास भर में, कई गैर-मुस्लिम नेताओं ने बड़े पैमाने पर अत्याचार किए हैं। इस्लाम में “जिहाद” का अर्थ है बुराई के खिलाफ प्रयास करना, न कि निर्दोषों की हत्या करना। दुनिया के कई बड़े युद्ध और भारी संख्या में हत्याएं गैर-मुस्लिमों द्वारा की गईं। मुसलमान जन्म से आतंकवादी नहीं होते; हिंसा एक मानव समस्या है, न कि किसी धर्म की।

किसी धर्म को उसके अनुयायियों के बजाय उसकी शिक्षाओं के आधार पर आंकना अधिक उचित होता है। इतिहास में कई हिंसक कृत्य ईसाइयों द्वारा किए गए, जैसे कि धर्मयुद्ध और उपनिवेशवाद। इसलिए ज़रूरी है कि हम धर्मों को उनके मूल सिद्धांतों के अनुसार परखें, न कि कुछ व्यक्तियों के कार्यों के आधार पर। आतंकवाद की निंदा करनी चाहिए — चाहे उसे अंजाम देने वाला किसी भी धर्म का हो।

विभिन्न युगों में ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने धर्म का इस्तेमाल सिर्फ एक पर्दे के रूप में किया, जबकि उनके कर्मों का धर्म से कोई लेना-देना नहीं था।

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसे ईश्वर ने पूरी मानवता के लिए प्रकट किया है, और यह किसी भी रूप में निर्दोष लोगों को नुकसान पहुँचाने की सख्त मनाही करता है। किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी दूसरे व्यक्ति की शारीरिक, भौतिक या नैतिक अखंडता को क्षति पहुँचाए।

इस्लाम मुसलमानों को यह सिखाता है कि वे हर किसी के साथ दया और सम्मान का व्यवहार करें — चाहे उसका धर्म, जाति, रंग या सामाजिक स्तर कुछ भी हो।
इस्लाम अत्याचार को प्रतिबंधित करता है और मानव अधिकारों की रक्षा करता है। यह मुसलमानों को शांति और सौहार्द में रहने और यहाँ तक कि अपने दुश्मनों के साथ भी न्याय करने की प्रेरणा देता है — चाहे युद्ध का समय ही क्यों न हो।

CHAT & DECIDE

इस्लाम नसलवाद और राष्ट्रवाद के मुददे को कैसे संबोधित करता है?

chatanddecide.com

CHAT & DECIDE

इस्लाम नस्लवाद और राष्ट्रवाद के मुद्दे को कैसे संबोधित करता है?

इस्लाम हर प्रकार के नस्लवाद और राष्ट्रवाद का सख्ती से विरोध करता है। यह सिखाता है कि सभी इंसान एक ही मूल—मिट्टी—से बनाए गए हैं, जिसका मतलब है कि किसी को भी दूसरे पर श्रेष्ठता का दावा करने का अधिकार नहीं है।

संस्कृति या नस्ल में भिन्नता के बावजूद, हम सभी एक ही तत्व से बने हैं। अल्लाह की नजर में, सच्ची श्रेष्ठता त्वचा के रंग, जातीयता या राष्ट्रीयता पर नहीं, बल्कि धार्मिकता और परहेज़गारी पर आधारित होती है।

इस्लाम नस्लों और संस्कृतियों की विविधता को विभाजन का कारण नहीं, बल्कि आपसी पहचान और समझ का एक माध्यम मानता है।

Chat & Decide

अल्लाह कहता है : “ ऐ मनुष्यो! हमने तुम्हें एक नर और एक मादा से पैदा किया तथा हमने तुम्हें जातियों और क़बीलों में कर दिए, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। निःसंदेह अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक सम्मान वाला वह है, जो तुममें सबसे अधिक तक़्वा वाला है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। “

(क़ुरआन 49:13, सूरह अल्-हुजुरात)

इस्लाम दूसरों को नीचा दिखाकर अपनी जाति, वंश या संस्कृति पर घमंड करने को सख्ती से मना करता है। यह सिखाता है कि सभी इंसान अल्लाह के सामने बराबर हैं, और सच्चा सम्मान नस्ल या राष्ट्रीय पहचान में नहीं, बल्कि तक़्वा (परहेज़गारी) और अच्छे कर्मों में है।

CHAT & DECIDE

फ़लिस्तीनी लोग उम्मीद क्यों बनाए रखते हैं
दर्द के बावजूद?

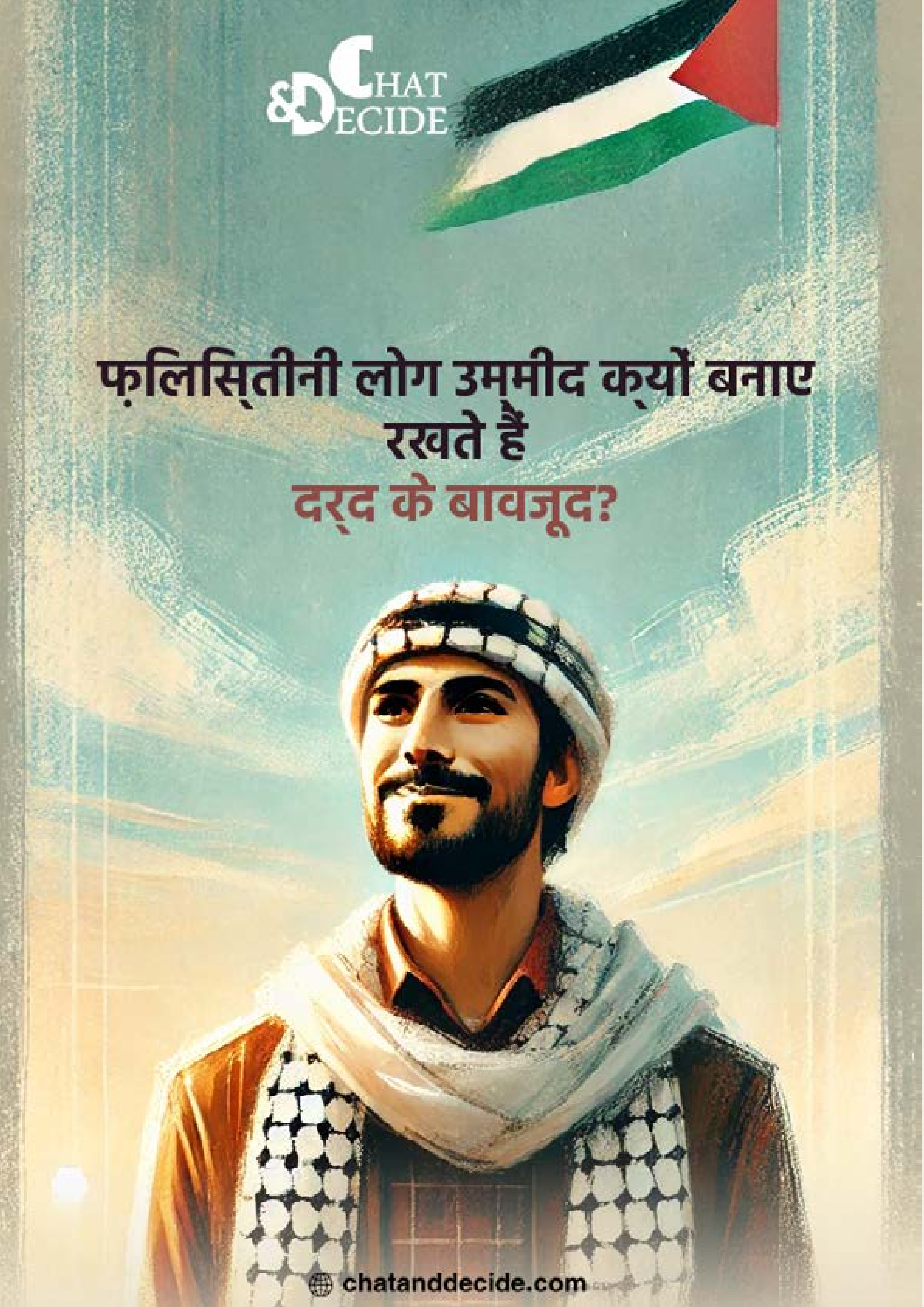

फ़िलिस्तीनी लोग दर्द के बावजूद उम्मीद क्यों बनाए रखते हैं?

मुसलमानों के लिए फ़िलिस्तीन केवल ज़मीन का एक टुकड़ा नहीं है, बल्कि यह एक पवित्र अमानत (ज़िम्मेदारी) है। यह अल-अक़्सा मस्जिद का घर है, जो इस्लाम में तीसरा सबसे पवित्र स्थल है, और यह पैग़म्बरों की कहानियों से गहराई से जुड़ा हुआ है: इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (अलैहिमुस्सलाम)।

लेकिन धार्मिक महत्व से परे, जो फ़िलिस्तीनियों को टिकाए रखता है, वह है — ईमान।
ईमान कि न्याय का महत्व है।

ईमान कि ज़ुल्म हमेशा नहीं रहेगा।

ईमान कि दर्द व्यर्थ नहीं होता, और हर कठिनाई का कोई मक़सद होता है।

इस्लाम में, ज़िंदगी एक इम्तिहान है और जो लोग सब्र के साथ इसे सहते हैं, उन्हें कल्पना से परे इनाम का वादा किया गया है।

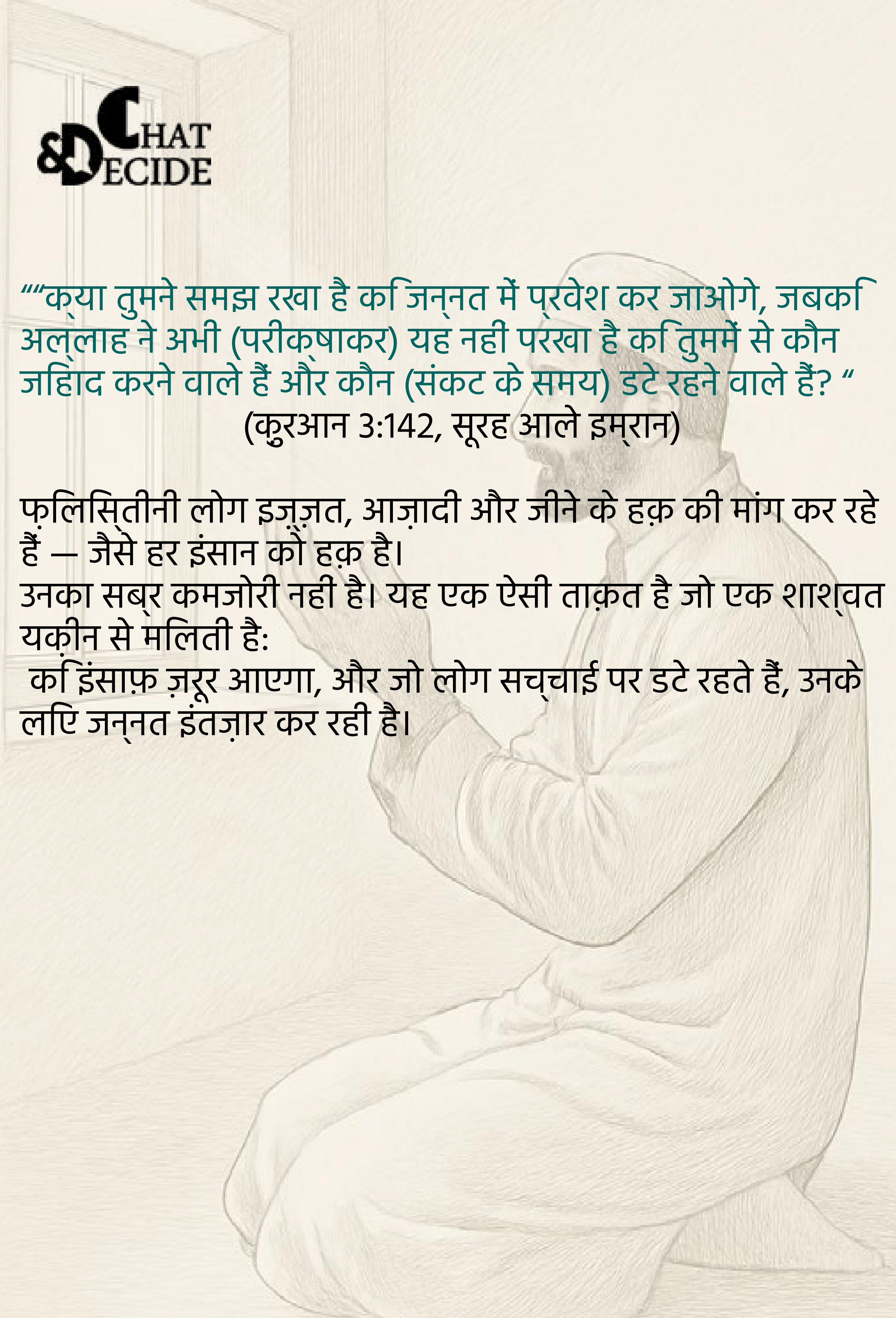

““क्या तुमने समझ रखा है कि जन्नत में प्रवेश कर जाओगे, जबकि अल्लाह ने अभी (परीक्षाकर) यह नहीं परखा है कि तुममें से कौन जिहाद करने वाले हैं और कौन (संकट के समय) डटे रहने वाले हैं? “

(क़ुरआन 3:142, सूरह आले इम्रान)

फ़िलिस्तीनी लोग इज़्ज़त, आज़ादी और जीने के हक़ की मांग कर रहे हैं — जैसे हर इंसान को हक़ है।
उनका सब्र कमजोरी नहीं है। यह एक ऐसी ताक़त है जो एक शाश्वत यक़ीन से मिलती है:
कि इंसाफ़ ज़रूर आएगा, और जो लोग सच्चाई पर डटे रहते हैं, उनके लिए जन्नत इंतज़ार कर रही है।

CHAT & DECIDE

कैसे इस्लाम अन्य धर्मों से अलग है?

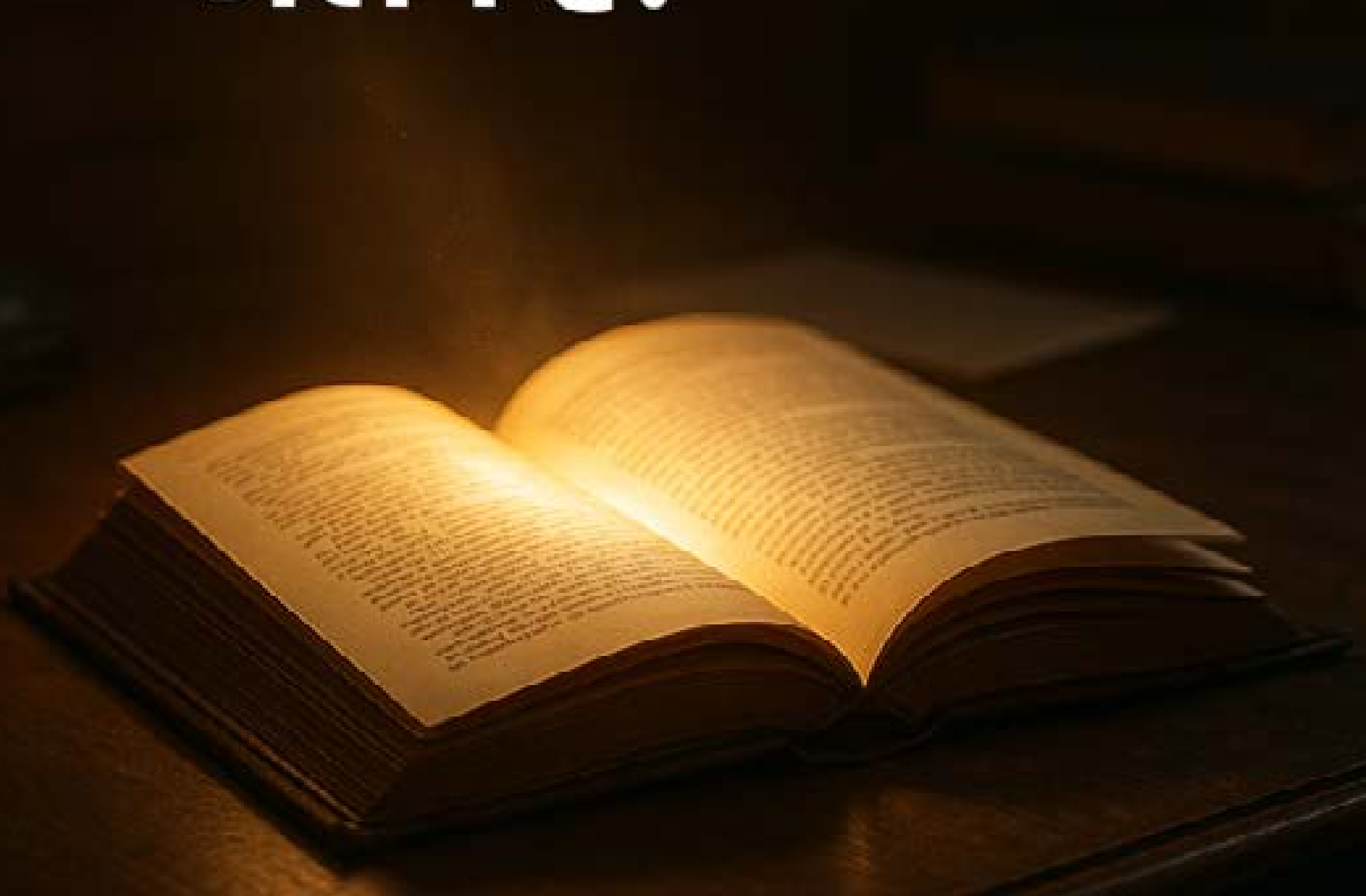

chatanddecide.com

इस्लाम अन्य धर्मों से कैसे अलग है?

1- सादगी, तर्कसंगतता और व्यवहारिकता:
इस्लाम सरल और स्पष्ट विश्वासों पर ज़ोर देता है, जैसे कि एक ईश्वर (अल्लाह) में विश्वास, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी, और मृत्यु के बाद की ज़िंदगी — ये सभी बातें तर्क और समझदारी पर आधारित हैं। इस्लाम में ईमान, तर्क और धर्म के बीच संबंध जोड़ता है।

इसकी शिक्षाएं जटिलताओं से मुक्त हैं — न कोई धर्मगुरु की श्रृंखला, न अमूर्त विचार, न ही कठिन अनुष्ठान।

इस्लाम सीधे तौर पर कुरआन से जुड़ने, सोच-विचार करने, और ज्ञान की तलाश को प्रोत्साहित करता है।

2- पदार्थ और आत्मा की एकता:
इस्लाम जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को एक साथ जोड़ता है, और दोनों को अलग-अलग मानने के विचार को खारिज करता है।

यह दुनियावी चीज़ों में संतुलन रखने के साथ-साथ नेक ज़िंदगी और अल्लाह की याद के ज़रिए आत्मिक उन्नति को बढ़ावा देता है।

3- इस्लाम एक सम्पूर्ण जीवन प्रणाली:

इस्लाम ज़िंदगी के हर पहलू में मार्गदर्शन देता है — व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, क़ानूनी और सांस्कृतिक।

यह धर्म को निजी और सार्वजनिक जीवन दोनों में एक मार्गदर्शक मानता है, और समाज सुधार के लिए अल्लाह की हिदायत पर ज़ोर देता है।

इसकी शिक्षाएं आत्मा की शुद्धता और समाज में न्याय स्थापित करने — दोनों पर ज़ोर देती हैं।

4- व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन:

इस्लाम हर व्यक्ति की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी को स्वीकार करता है, और साथ ही सामूहिक भलाई को भी बढ़ावा देता है।

पैगंबर मुहम्मद (स.अ.) की शिक्षाएं इस बात पर ज़ोर देती हैं कि हर व्यक्ति अपने अधिकार क्षेत्र के लिए ज़िम्मेदार है।

यह व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करता है और बिना सामाजिक संतुलन बिगाड़े व्यक्तित्व के विकास को प्रोत्साहित करता है।

5- समानता और भाईचारा:

इस्लाम हर इंसान को नस्ल, भाषा या राष्ट्रीयता से ऊपर उठाकर बराबरी का दर्ज़ा देता है।

यह नस्ल, सामाजिक स्थिति या दौलत के आधार पर किसी भी भेदभाव को नकारता है, और वैश्विक भाईचारे की भावना को बढ़ावा देता है। यह पूर्वग्रह (भेदभाव) को खत्म करने और साझा मानवीय गरिमा को पहचानने की शिक्षा देता है।

6- स्थायित्व और परिवर्तन का संतुलन:

इस्लाम स्थायित्व और समयानुसार बदलाव के बीच संतुलन बनाए रखता है।

कुरआन और सुन्नत शाश्वत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जबकि शरीअत (इस्लामी क़ानून) समय और परिस्थिति के अनुसार लचीलापन देता है।

यह प्रणाली हर युग और समाज के लिए प्रासंगिक बनी रहती है।

7- शिक्षाओं का संरक्षण:

कुरआन और पैगंबर मुहम्मद (स.अ.) की हदीसें अपने मूल रूप में संरक्षित हैं, जो सदियों से अपरिवर्तित मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

यह संरक्षण इस्लामी शिक्षाओं की सच्चाई, विश्वसनीयता और कालातीतता की गारंटी देता है।

CHAT & DECIDE

इस्लाम में विनम्रता:
स्वस्थ और सफल रिश्ते बनाने के लिए एक मूलभूत मूल्य

chatanddecide.com

इस्लाम में विनम्रता: स्वस्थ और सफल रिश्ते बनाने के लिए एक मूलभूत मूल्य

एक ऐसी दुनिया में जहाँ सामाजिक दबाव और लगातार प्रतिस्पर्धा हावी है, बहुत से लोग मानते हैं कि महानता दिखावे और ऊँचे दर्जे को पाने में है। लेकिन इस्लाम में, सच्ची महानता विनम्रता और दया में निहित है।

इस्लाम विनम्रता को सबसे ऊँचे गुणों में से एक मानता है, और यह सिखाता है कि मोमिन (विश्वासी) दूसरों के साथ नम्रता, शालीनता और सम्मान से पेश आए। यह हमें सिखाता है कि ज़िंदगी को उसके दिखावे, धन या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि दिल की पवित्रता और चरित्र की महानता से आंका जाता है।

अल्लाह ने कुरआन में कहा है: “और ‘रह़मान’ के बंदे वे हैं, जो धरती पर विनम्रता से चलते हैं और जब जाहिल (अक्खड़) लोग उनसे बात करते हैं, तो कहते हैं सलाम है। ;”

(कुरआन 25:63, सूरह अल्-फुर्क़ान)

यह शक्तिशाली आयत (कुरआन की) यह स्पष्ट करती है कि सच्चे ईमान वाले लोग घमंड या अहंकार के साथ नहीं, बल्कि नम्रता और गरिमा के साथ व्यवहार करते हैं — चाहे सामने वाला कोई भी हो: पुरुष या महिला, अमीर या गरीब, शक्तिशाली या साधारण।

इस्लाम हमें याद दलिाता है कि ज़िंदिगी अंततः हमारे रिश्तों और दूसरों से जुड़ेपन के बारे में है, और ऐसे रिश्ते केवल तभी फल-फूल सकते हैं जब वे विनम्रता और पारस्परिक सम्मान की बुनियाद पर टिके हों। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस गुण के सबसे उत्तम उदाहरण थे। उन्होंने अमीरों और ग़रीबों, शक्तिशालियों और निर्बलों — सभी से दया, सहानुभूति और बराबरी के सम्मान से पेश आया। उन्होंने कभी अपने दर्जे पर घमंड नहीं किया, बल्कि लोगों के बीच रहकर उनकी बातें सुनीं, उनके बोझ हल्के किए, और उन्हें प्रेम से सेवा दी।

उनके उदाहरण से हम सीखते हैं कि विनम्रता कमजोरी की निशानी नहीं, बल्कि अंदरूनी ताक़त का प्रतिबिंब है। सच्ची महानता दूसरों की सेवा करने में है — वह भी सच्चे दिल और नेक नीयत के साथ। इस्लाम में विनम्रता का मतलब हीनता नहीं है। बल्कि यह उस व्यक्ति की शांत ताक़त है जो हर आत्मा की क़दर करता है, दूसरों को सम्मान देता है, और दुनिया में शांति, गरिमा और मक़सद के साथ चलता है।
अगर आप सच्ची खुशी और गहरे रिश्तों की तलाश में हैं — तो विनम्रता वही रास्ता है जिसे आपके दिल को अपनाना चाहिए।

इस्लाम में परिवार कैसे खुशी और सफलता का स्रोत बन सकता है?

इस्लाम में परिवार कैसे खुशी और सफलता का स्रोत बन सकता है?

इस्लाम में, परिवार सिर्फ़ एक सामाजिक इकाई नहीं है, बल्कि यह भावनात्मक और आध्यात्मिक स्थिरता की बुनियाद है — एक पवित्र आधार जिस पर एक मज़बूत, संगठित और सौहार्दपूर्ण समाज की नींव रखी जाती है।

इस्लाम हमें सिखाता है कि परिवार के भीतर एक-दूसरे से कैसे प्रेम किया जाए, कैसे इज़्ज़त और सम्मान दिया जाए। यह दिखाता है कि पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों के बीच के रिश्ते रहमत (दया), मोहब्बत और आपसी सम्मान पर आधारित होने चाहिए।

पवित्र क़ुरआन में यह स्पष्ट मार्गदर्शन दिया गया है कि परिवार के सदस्यों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

अल्लाह कहता है: " और (ऐ बंदे) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो, तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि तेरे पास दोनों में से एक या दोनों वृद्धावस्था को पहुँच जाएँ, तो उन्हें 'उफ़' तक न कहो, और न उन्हें झिड़को, और उनसे नरमी से बात करो।" (क़ुरआन 17:23, सूरह अल्-इस्रा)

यह आयत हमें खूबसूरती से याद दिलाती है कि हमें अपने माता-पिता के साथ, विशेष रूप से उनकी बुढ़ापे में, कोमलता, सब्र और सम्मान के साथ पेश आना चाहिए। यह दर्शाता है कि इस्लाम परिवार को केवल साथ रहने की जगह नहीं मानता, बल्कि इसे मोहब्बत, शुक्रगुज़ारी और नैतिक ज़िम्मेदारी की एक सुरक्षित पनाहगाह बनाता है।

इस्लाम में, परिवार सिर्फ़ एक साथ रहने वाले लोगों का समूह नहीं है, बल्कि यह एक ईश्वरीय प्रेरणा से बनी संस्था है, जो सहयोग, सहानुभूति और साझा कर्तव्य पर आधारित होती है।
पति को सलाह दी जाती है कि वह एक प्रेमपूर्ण साथी बने, सहारा दे और भावनात्मक मज़बूती का स्रोत बने।
पत्नी को सलाह दी जाती है कि वह सम्मान, देखभाल और समझदारी का स्रोत बने।

बच्चों को सिखाया जाता है कि वे अपने माता-पिता का सम्मान करें, उनकी सेवा करें, और घर की शांति और भलाई में सक्रिय योगदान दें।
पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमेशा परिवार के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने पत्नियों के साथ भलाई करने, बच्चों की इस्लामी मूल्यों के साथ परवरिश करने, और माता-पिता के साथ नरमी और देखभाल से पेश आने की शिक्षा दी।

उनके उदाहरण से हम सीखते हैं कि पारिवारिक रिश्ते रहमत, सहानुभूति और आत्मिक विकास का शक्तिशाली स्रोत बन सकते हैं। इस्लाम में, परिवार केवल प्रेम की पनाहगाह नहीं है, बल्कि यह वह पालना है जहाँ गहरे इंसानी मूल्य — जैसे सम्मान, करुणा और एकता — को पाला जाता है। इन सिद्धांतों पर आधारित परिवार एक न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और नैतिक रूप से मज़बूत समाज के निर्माण में योगदान देता है।

CHAT & DECIDE

"निःसंदेह हमने इनसान को मिश्रित वीर्य से पैदा किया, हम उसकी परीक्षा लेते हैं। तो हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया।"

(कुरआन 17:23, सूरह अल्-इन्सान)

“निःसंदेह हमने इनसान को मिश्रित वीर्य से पैदा किया, हम उसकी परीक्षा लेते हैं। तो हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। “

(कुरआन 17:23, सूरह अल्-इन्सान)

यह शक्तिशाली आयत हमें रुकने और अल्लाह की रचना की महानता और उसकी अनगिनत नेमतों पर चिंतन करने की दावत देती है। वह इंसान जो आज बुद्धि, दृष्टि और सुनने की शक्ति रखता है — कभी एक तुच्छ बूंद था, एक बेहद साधारण और विनम्र आरंभ।
इतनी सादगी से एक ऐसा प्राणी अस्तित्व में आया जो जटिलता, समझ और क्षमताओं से भरपूर है।
आख़िर कैसे हुआ कि उस एक बूँद से इतने जटिल अंग, भावनाएं, और इंद्रियाँ बन गईं?

हमारी ये इंद्रियाँ कहाँ से आई — यह सुनने, देखने, समझने और महसूस करने की क्षमता? ये केवल जैविक प्रक्रियाएं नहीं हैं, बल्कि ये एक ऐसे ख़ालिक (रचयिता) की निशानियाँ (आयात) हैं, जिसने हर चीज़ को बेइंतिहा हिकमत और समझदारी के साथ बनाया।
यह आयत हमें हमारे अस्तित्व के पीछे की इलाही (ईश्वरीय) रचना पर गहराई से विचार करने की दावत देती है। हमारे DNA की रचना से लेकर उन इंद्रियों तक जिनसे हम दुनिया के साथ जुड़ते हैं — हमारे अस्तित्व का हर हिस्सा अल्लाह की असीम शक्ति और सम्पूर्ण ज्ञान की गवाही देता है।

यह हमें याद दिलाती है कि हमारी ज़िंदगी कोई इत्तिफ़ाक़ (दुर्घटना) नहीं है, बल्कि एक सोच-समझकर की गई ईश्वरीय रचना है। हमें एक मक़सद के साथ पैदा किया गया है — ताकि हमें आज़माया जा सके, और हमें वह सब दिया गया है जिससे हम सोचें, सीखें और उस इम्तिहान में आगे बढ़ें।

तो क्या हम वाकई में इन नेमतों को पहचानते हैं और उनकी क़दर करते हैं? क्या हम ज़िंदगी, सोचने, समझने और खोज करने की नेमतों पर शुक्र अदा करते हैं? या हमने इन इलाही तोहफ़ों को नज़रअंदाज़ कर दिया है?

यह आयत केवल एक तथ्य नहीं है, बल्कि यह एक चेतावनी है —
एक पुकार है हमारे दिलों को अल्लाह की महानता के प्रति जिगाने की,
इंसानी आत्मा के चमत्कार पर सोचने की,
और अपने रब के प्रति शुक्र, मक़सद और जागरूकता के साथ जीने की।

CHAT & DECIDE

पैगंबर मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"सच्चाई को मज़बूती से थाम लो, क्योंकि सच्चाई नेकी (सुकर्म) की राह दिखाती है और नेकी जन्नत की ओर ले जाती है।"

[इसे बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।]

chatanddecide.com

Chat & Decide

पैगंबर मुहम्मद ((सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

“सच्चाई को मज़बूती से थाम लो, क्योंकि सच्चाई नेकी (सुकर्म) की राह दिखाती है और नेकी जन्नत की ओर ले जाती है।”

[इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।]

इस्लाम में, सच्चाई केवल एक नैतिक मूल्य नहीं है, बल्कि यह एक रास्ता है — एक ऐसा जीवन जीने का तरीका जो इंसान को बिर्र (सदाचार/धार्मिकता) की ओर ले जाता है, और वही बिर्र इंसान को जन्नत की अनंत खुशी तक पहुँचाता है। यह हदीस हमें बताती है कि ईमानदारी हमारे जीवन और दिलों को आकार देने में कितना गहरा प्रभाव डालती है।

सच्चाई सभी मानवीय रिश्तों की बुनियाद है — चाहे वह काम की जगह हो, निजी संबंध हों, या समाज का ढांचा। यह एक ऐसा प्रकाश है जो व्यवहार को रोशन करता है, मेलजोल को मजबूत करता है, और इंसानियत में ईमानदारी को कायम रखता है।
जब कोई इंसान सच्चाई को अपनाता है, तो वह खुद को ईमानदारी, सच्चे इरादों और नैतिक स्पष्टता के साथ जोड़ लेता है। वह एक ऐसा इंसान बन जाता है जिस पर लोग उसके शब्दों और कर्मों में भरोसा कर सकते हैं।

CHAT & DECIDE

“सच्चाई धार्मिकता की ओर ले जाती है”, क्योंकि जब हम सच्चे होते हैं, तो हमारा ज़मीर हमें सही काम करने के लिए प्रेरित करता है। इस्लाम में बिर्र (सदाचार) सिर्फ अच्छाई नहीं है, बल्कि इसमें विनम्रता, दया और अपने चरित्र व समाज को सुधारने का संकल्प भी शामिल होता है।

“और बिर्र जन्नत की ओर ले जाता है” — क्योंकि जब ज़िंदगी सच्चाई और अच्छे आचरण पर आधारित होती है, तो वह खुद ब खुद अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक चलती है। इससे दिल को सुकून मिलता है, रिश्तों में स्थिरता आती है, और यह दुनियावी व आख़िरत की सफलता के दरवाज़े खोलता है।

आज की दुनिया में, जहाँ झूठ, धोखा और छिपे हुए इरादों की वजह से विवाद पैदा होते हैं, वहाँ सच्चाई एक ऐसी ताक़त है जो इलाज, मेल-मिलाप और भरोसे को फिर से कायम कर सकती है। यह एक नैतिक दिशा है जो इंसानी जुड़ाव को मज़बूत करती है, इज़्ज़त को गहराई देती है, और आत्मा को सुकून देती है।
तो क्या आपने कभी रुक कर सोचा है कि अगर आप हमेशा सच बोलें, तो आपकी ज़िंदगी — और आपके आस-पास के लोगों की ज़िंदगी — कितनी बदल सकती है?
सच्चाई सिर्फ एक गुण नहीं है।
यह आपके आंतरिक सुकून, भरोसेमंद रिश्तों और सच्चे जीवन का रास्ता है।